अध्याय 22

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	**बाँटना** (20 मिनट)	[शान्त समय] रोमियों 5–8

आगे बढ़कर संक्षेप में ***बताएं*** (या अपने नोट्स में से पढ़ें) कि आपने शान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (रोमियों 5–8) से क्या सीखा।
अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट)	[मसीह में नया जीवन] गवाही देना : मत्ती 10:32

क–ध्यान करना

निम्नलिखित याद करने वाले पद को श्वेत/श्याम पट पर लिखें

गवाह बनना मत्ती 10:32
" जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा।" मत्ती 10:32

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के हवाले लिखें:

यीशु ने अपने चेलों से ये बातें तब बोली जब उसने उन्हें जाकर उसके राज्य का सुसमाचार सुनाने की आज्ञा दी (मत्ती 10:5–10)। इस सच्चाई को जानने के बावजूद कि चेलों को उनके संदेशों का विरोध सहना पड़ेगा, चेलों को निडर होकर सुसमाचार सुनाना बहुत ज़रूरी है। यीशु ने उन्हें निडरता के साथ उसके गवाह होने के चार कारण दिये।

1. आप यीशु के निडर गवाह बन सकते हैं, क्योंकि आपके शत्रु इस सच्चाई को नहीं मिटा सकते कि एक दिन सरे आम उनका तमाशा बनाया जाएगा और आपको सरे आम निर्दोष ठहराया जाएगा।

पढ़ें, मत्ती 10:26–27। शत्रु इस सच्चाई से बच नहीं सकता कि एक दिन उसका सताव करना, विरोध करना और मसीहियों को घात करना सार्वजनिक तौर पर बेपरदा हो जायेगा! न्याय के दिन मसीह व मसीहियों के दुश्मन दुनिया में उस समय तक पैदा हुए सारे मानवों के सामने दण्ड भुगतेगें। बाइबल कहती है कि उनके सारे काम वरन सारे गुप्त कामों को न्याय किया जाएगा (सभोपदेशक 14:12)

और शत्रु इस सच्चाई को भी नहीं मिटा सकता कि एक दिन चेलों या विश्वासियों को सार्वजनिक तौर पर निंदोष ठहराया जाएगा। न्याय के दिन मसीह व मसीह के लोग धरती पर उस दिन तक पैदा हुए सारे लोगों के सामने आदर पाएगें। बाइबल कहती है कि मसीह सबको उनके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा (मत्ती 16:27)।

इसलिए यीशु मसीह के चेलों को कभी भी परमेश्वर की राज्य के सुसमाचार को खुलेआम, हिम्मत से साथ व निडरता से प्रचार करने में घबराना नहीं चाहिए।

2. आप यीशु के निडर गवाह हो सकते हैं, क्योंकि आपका शत्रु केवल आपके शरीर को धात कर सकता है आपके प्राण को नहीं।

पढ़ें मत्ती 10:28। चाहे मसीही या मसीहिया के दुश्मन कुछ भी करने का प्रयास करें, एक काम वे कभी नहीं कर सकते! वे आपके प्राण को कभी नाश नहीं कर सकते! आपकी देह आपके मूल का प्रत्यक्ष भाग है जबकि आपका प्राण (या आत्मा)आपके बजूद का अप्रत्क्ष भाग।

3. आप यीशु मसीह के निडर गवान बन सकते हैं, क्योंकि शत्रु न तो आपके प्रति परमेश्वर की इच्छा को और न की उसके प्रेम को रद्द कर सकता है।

पढ़ें मत्ती 10:29–31। यह सत्य है कि एक गौरैया के समान, आप भी एक दिन मर जाएंगे। लेकिन यदि परमेश्वर उन गौरैयों की देखभाल करता है जिनका कोई मूल्य नहीं है, तो परमेश्वर तुम्हारी देखभाल क्यों न करेगा, जिनका मूल्य गौरैयों से कहीं अधिक है? परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं कि वह आप की देखभाल करेगा और विशेष रीति से आपके जीवन में काम करेगा। इस धरती पर रहते हुए जो कुछ आपके साथ होता है वह सब उसकी सर्तक आंखों के सामने होता है और वह केवल इसलिए होता है क्योंकि या तो उसने इसकी योजना बनायी है या फिर उस कार्य को होने की अनुमति दी है। (रोमियों 8:28)

4. **आप यीशु मसीह के निडर गवान बन सकते हैं, क्योंकि जिस प्रकार आप यीशु को सबसे सामने मान लेते हैं एक दिन वह भी सब के सामने आपको मान लेगा।**

पढ़ें मत्ती 10:32–33। मान लेना या अंगीकार करने का अर्थ सार्वजनिक तौर पर स्वीकार कर लेना है कि यीशु मसीह आपका प्रभु और उद्धारकर्ता है। इसका अर्थ है कि आप संसार में किसी भी व्यक्ति के सामने यहां तक कि अपने शत्रु के सामने यीशु मसीह को लेकर नहीं लज्जाते हैं (मरकुस 8:34–38)।अन्तिम न्याय के दिन, यीशु भी सभी कालों में जन्में लोगों के सामने आपकों पहिचान और मान लेगा (मत्ती 25:34–36)।

ख. याद करना व पुनरावलोकन करना

1. किसी खाली कार्ड पर या कॉपी के किसी पेज पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2. ठीक तरीके से बाइबल की आयत को ***याद करें।*** गवाह बनना : मत्ती 10:32
3. ***पुनरावलोकन*** / दो–दो के समूह में बंट जाएं तथा एक दूसरे से पिछली याद की गयी बाइबल की आयत को पूछें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) [सम्बन्ध] **मसीही परिवार : इफिसियों 6:1–4**

एक साथ मिलकर बाइबल अध्ययन के पाँच कदम वाले तरीके का इस्तेमाल करें तथा इफिसियों 6:1–4 का अध्ययन करें।

कदम 1. पढें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम इफिसियों 6:1–4 को एक साथ ***मिलकर पढ़ें***/
आइये हम बारी बारी करके तब तक एक एक आयत पढ़े जब तक निर्धारित आयतें खत्म न हो जाएं।

कदम 2. खोज। पुनरावलोकन

ध्यान दें । इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद की कौन सी सच्चाई ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लिखें। एक या दो बातों को लिखें जो आपकी समझ में आयी हो। उन बातों के बारे में विचार करें तथा उन विचारों को अपनी कॉपी में लिखें।
बाँटें। (समूह के लोगों को दो मिनट सोचने व लिखने का समय प्रदान करने के बाद, अपने विचारों को व्यक्त करें। आइये हम एक दूसरे के साथ उन विचारों को बाँटे जो हमने सीखा या समझा है।
(नीचे कुछ लोगों द्वारा अपने अनुभवों को बांटने के उदाहरणों को दिया है। याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य भिन्न भिन्न बातों को बाँटेंगे, यह जरूरी नहीं है कि उनके भी अनुभव समान हों।)

6:1

खोज 1.मसीही बच्चों को अपने माता पिता की आज्ञा माननी चाहिए।

''हे बालको, प्रभु में अपने माता पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है।'' किसी ने इस प्रकार सोचा कि उन्हें अपने माता का आज्ञाकारी तभी होना है, जब वे प्रभु में हों अर्थात जब उनके माता पिता मसीह हों। लेकिन यह ठीक नहीं है। उस आज्ञा को मतलब है कि बच्चों को अपने माता पिता का आज्ञाकारी इसलिए नहीं होना है क्योंकि उनके माता पिता मसीही है या नहीं, बल्कि इसलिए आज्ञाकारी होना है क्योंकि बच्चे मसीही हैं। आज बहुत से गैर मसीही बच्चे अपने माता पिता की बात को नहीं मानते, मसीही बच्चों को अपने माता पिता की आज्ञा माननी चाहिए, क्योंकि मसीह ने उन्हें ऐसा करने की आज्ञा दी है। अगर उनके माता पिता मसीही या उनके साथ अच्छा बर्ताव करने वाले नहीं है तब भी उन्हें अपने अभिभावको की बात माननी चाहिए।

6:4

खोज 2. मसीही पिता को अपने बच्चों को निरूत्साहित नहीं करना चाहिए।

'' हे बच्चे वालों अपने बच्चों को रिस न दिलाओ''। बच्चों का कर्त्तव्य माता पिता की आज्ञा मानना है तो माता पिता का कर्त्तव्य अपने बच्चों को प्रोत्साहित करना है। यह खण्ड कुलुस्सियों 3:21 में भी लिखा है,'' हे बच्चे वालों अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उनका साहस टूट जाए। बच्चे तब निराश या चिड़चिड़े हो जाते हैं जब उन्हें बार–बार उनकी गलतियों का एहसास दिलाया जाता है और कभी उन्हें सही काम करने पर शाबाशी नहीं मिलती।

मेरे बच्चे होने के कारण, मेरे लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि मैं लगातार अपने बच्चों को प्रोत्साहित करूँ। यद्यपि वे सिद्ध नहीं हैं, फिर भी मुझे जानबूझकर उन्हें रिस नहीं दिलानी या उन्हें दिल को तोड़ना नहीं है। अतः मैंने यह निर्णय लिया है कि मैं उनके लिए प्रोत्साहक बनूगाँ!

कदम 3. प्रश्न वर्णन

ध्यान दें: इस खण्ड के आधार पर आप समूह से कौन सा प्रश्न पूछना चाहेंगे?
आइये हम इफिसियों 6:1–4 में दी गयी सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जिनके बारे में हम अभी तक नहीं जानते हैं।
लिखें। अपने प्रश्नों को सम्भव स्पष्ट स्वरूप प्रदान करें। उसके पश्चात अपने प्रश्नों को अपनी कॉपी में लिखें।
बाँटें (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट तक विचार विमर्श करने करने तथा उन्हें लिखने के बाद, सभी लोगों को अपने प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान करें।
चर्चा करें। (फिर, उनमें से कुछ प्रश्नों को चुनकर, अपने समूह में चर्चा करते हुए उन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें)
(नीचे कुछ ऐसे प्रश्नों को व प्रश्नों के उत्तरों पर की गयी चर्चा को उदाहरण के तौर पर दिया गया है जिन्हें विद्यार्थी पूछ सकते हैं)

6:1

प्रश्न 1. किस आयु तक बच्चों को अपने माता पिता की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए?

ध्यान दें। यह एक अति महत्वपूर्ण प्रश्न है, क्योंकि यह प्रश्न संसार भर के सभी समाजों को छूता है। संसार में कुछ संस्कृतियों में बच्चों को सम्पूर्ण जीवनकाल में व हर परिस्थिति में अपने माता पिता के प्रति आज्ञाकारी होने की शिक्षा दी जाती है। माता पिता की मृत्यु होने तक, उनका अपने बच्चों पर अधिकार होता है।

आइये हम सबसे पहले यीशु मसीह के उदाहरण पर ध्यान दें। यीशु मसीह जब बारह वर्ष के बालक थे तो वे अपने माता पिता के आज्ञा माना करते थे (लूका 2:41–52)। लेकिन जब यीशु मसीह व्यस्क होकर अपने जीवन के कामों में व्यस्त हो गये तब यीशु ने अपने माता पिता की बात नहीं मानी और न ही उन्होने उसकी इच्छाओं को पूरा किया (मरकुस 3:31–35)। वह एक व्यस्क था और उसके जीवन के कुछ अपने लक्ष्य थे।

अतः बाइबल हमें यह शिक्षा नहीं देती कि मसीहियों को आजीवन अपने माता पिता की हर परिस्थिति में आज्ञा माननी चाहिए। लेकिन बाइबल यह जरूर सिखाती है कि जब तक वे बच्चे हैं वे अपने माता पिता के प्रति आज्ञाकारी बने, अर्थात जब तक वे अपरिपक्व, नाबालिग और पूरी तरह से माता पिता पर निर्भर हैं। व्यस्क जीवन की शुरूआत तब हो जाती है

जब वे अपने माता पिता का घर छोड़कर अलग रहना प्रारम्भ करते हैं या वे भविष्य में माता पिता पर निर्भर नहीं रहते या वे जब विवाह कर लेते हैं। अतः माता पिता के प्रति आज्ञाकारी होने की एक समय सीमा है। बच्चों को अपने व्यस्क हो जाने तक अपने माता पिता की आज्ञा माननी चाहिए।

6:2

प्रश्न 2. माता पिता का आदर करने के महत्वपूर्ण व्यवहारिक तरीके क्या हैं?

ध्यान दें। हालांकि बच्चों को जब तक वे बच्चे हैं तब तक ही अपने माता पिता की आज्ञाओं को मानना है परन्तु उन्हें अपने जीवन भर माता पिता का आदर करना जरूरी है। 'आदर ' करने का अर्थ, उच्च सम्मान देना, उनका ध्यान रखना, बिना किसी स्वार्थ,भय या अनिच्छा के उन्हें प्रेम करना है। निम्नलिखित उदाहरणों को संसार भर के लोगों के उनके माता पिता के सम्बन्ध, उनके सास–ससुर के साथ सम्बन्ध तथा परमेश्वर पिता के साथ उनके सम्बन्ध को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। अपने माता पिता, सास–ससुर और अपने स्वर्गीय पिता का आदर या अनादर करने के पाँच तरीके हैं।

(1) अपने माता पिता से बहस न करके उनका आदर करें।

जब आप अपने माता पिता से उन चीज़ों को लेकर बहस करते हैं जिनका कोई आत्मिक मतलब नहीं होता है तो आप उनका अनादर करते हैं।

उदाहरण के लिए आप उनसे बहस न करें कि उन्हें किस प्रकार के कपड़ें पहिनने चाहिए या उन्हें टी.वी में कौन सा कार्यक्रम देखना चाहिए या उन्हें घर का कौन सा काम करना चाहिए। बहस करने का मतलब यह जताना है कि आपके माता पिता का दृष्टिकोण बिल्कुल बकवास है।

आप अपने माता पिता का सकारात्मक तरीके से किस प्रकार आदर कर सकते हैं? अपने विचारों को बड़ी विनम्रता के साथ उनके सामने रखें और फिर परमेश्वर को अपनी इच्छा के अनुसार काम करने का अधिकार दे। इस तरीके से आप दर्शाते हैं कि आप विश्वास करते हैं कि हर परिस्थिति में परमेश्वर का नियन्त्रण है, और परमेश्वर उन कामों को पूरा कर सकते हैं जो कार्य आपके हित में हैं।

(2) अपने माता पिता से सलाह लेने के द्वारा उनका आदर करें।

जब आप अपने माता पिता की किसी भी सलाह पर ध्यान दिये बिना ही उसे अस्वीकार कर देते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं।

आप अपने माता पिता का सकारात्मक तरीके से किस प्रकार आदर कर सकते हैं? आपके माता पिता जो भी सुझाव या सलाह देते हैं उन्हें सीखने का प्रयास करें। जब आपके पास अवसर है तो आप उनके वर्षों के अनुभव से तथा बुद्धि के संग्रह से सीखें। खास तौर आप उनके महारथ हासिल किये हुए क्षेत्रों, उनके कौशल व गुणों वाले क्षेत्रों से सीखें।

(3)आप अपने वास्तविक जीवन में अपने माता पिता को शामिल करने के द्वारा उनका आदर करें।

जब आप अपने माता पिता को इस बात की भनक नहीं लगने देते कि आप क्या सोच, क्या महसूस या वास्तव में अपने जीवन में क्या कर रहे हैं, तो आप उनका अनादर करते हैं। आप तब भी अपने माता पिता का अनादर करते हैं जब आप उन्हें अपनी योजनाओं के बारे में पता नहीं चलने देते और न हीं उन्हें अपने जीवन के मामलों में कोई हस्तक्षेप करने देते हैं। जब आप अपने माता पिता को अपने दुःख, सुख, अपने आनन्दमय समय या विकट परिस्थियों में शामिल नहीं करते तो आप उनका अनादर करते हैं। अपने माता पिता को अपने जीवन और अपने निर्णयों से दूर रखने का अर्थ है कि वे इस मामले में शामिल होने के लायक नहीं हैं।

आप अपने माता पिता का सकारात्मक तरीके से किस प्रकार आदर कर सकते हैं? अपने माता पिता के साथ अपने जीवन से जुड़ी बातों को बाँटें। कई बार ऐसा करना मुश्किल होता है, लेकिन फिर भी यह अपने माता पिता का आदर करने का एक तरीका है। उनसे बात करने के लिए पहल करें। अपने जीवन से जुड़ी गतिविधियों के बारे में उनसे बात करें: आप स्कूल में और काम पर क्या करते हैं, आप अपने मित्रों के साथ क्या करते हैं या आप अपनी मण्डली के साथ मिलकर क्या करते हैं। उनसे बातें करें कि आप परमेश्वर, लोगों और संसार के बारे में क्या सोचते हैं। उनके साथ अपने मसीही मत पर विचार करें। उन्हें बतायें कि आप क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं और क्या करना चाहते हैं। आप अपने माता पिता को अपनी योजनाओं और निर्णयों में शामिल करने के द्वारा उनका आदर करते हैं। अपने माता पिता के अनुभवों और बुद्धिमानी का सम्मान करें और उनसे सलाह लें। भले ही आपका अन्तिम निर्णय उनकी इच्छा के विपरीत

हो, आप उनको एहसास दिलाएं कि आप आपने उनकी सलाह को सुना था और उनके नज़रिये पर गम्भीरता से विचार किया था।

(4) सेवा करने के द्वारा अपने माता पिता का आदर करें।
आप यदि अपने माता पिता के कहने पर ही उनकी सेवा करते हैं तो आप उनका अनादर करते हैं। आप उनसे पहल करने की अपेक्षा करते हैं। यदि वे आपसे न कहें तो आप कोई काम नहीं करते।

आप अपने माता पिता का सकारात्मक तरीके से किस प्रकार आदर कर सकते हैं? अपने आप में यह देखने की आदत बनायें कि आप कहां सेवा कर सकते हैं, कहां पर किसी दूसरे को आपकी सहायता की ज़रूरत है या क्या कोई ऐसा काम है जिसे केवल आप ही कर सकते है या कोई दूसरा काम करना नहीं चाहता है। सेवा व सहायता करने के लिए पहल करें और अपने माता पिता के आदेश का इन्तज़ार न करें।

(5) अपने माता पिता को प्रेम करने के द्वारा उनका आदर करें।
अगर आप परम्परागत या औपचारिक तौर पर अपने माता पिता पर प्रेम प्रगट करते हैं जैसे, उनसे मिलने जाना, उन्हें उपहार देना, या इच्छा पूरी करना, तो आप उनका अनादर करते हैं।

आप अपने माता पिता का सकारात्मक तरीके से किस प्रकार आदर कर सकते हैं? सच्चा मसीही प्रेम औपचारिकताओं या परम्पराओं को पूरा करने से कहीं आगे है। सच्चा मसीही प्रेम दूसरों की कमियों को सहन कर लेता और आपके प्रति उनके द्वारा की गयी गलतियों को भी क्षमा कर देता है। जब आप मसीही बनते हैं तो सामान्यतः अभिभावकों को डर लगता है कि यीशु मसीह के प्रति आपके समपर्ण से आप पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। वे डरते हैं कि आप अपनी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएंगे, आपको अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी, आप अपने जीवन में सफल नहीं हो पाएंगे और आपका वेतन कम होगा जिसके कारण आप अपने माता पिता की आर्थिक मदद नहीं कर पाएंगे। उन्हें डर लगता है कि आप अपनी संस्कृति को खो देगें और उनके धर्म की प्रतिष्ठा भंग हो जाएगी। अपने माता पिता के सामने अपने विश्वास सही तरीके से रखें और उन्हें साबित कर के दिखाएं कि आप यीशु मसीह द्वारा आपके लिए किये गये कामों की वजह से अधिक ज़िम्मेदार व अधिक प्रेम करने वाले व्यक्ति बन गये है।

6:4

प्रश्न 3. पिता अपने बच्चों को किसी प्रकार प्रोत्साहित कर सकते है?

ध्यान दें। कई पिता अपने बच्चों को रिस दिलाते हैं। रिस दिलाने का अर्थ उन्हें निरूत्साहित करना है। बहुत से तरीके हैं जिनके द्वारा पिता अपने बच्चों को निरूत्साहित कर सकते हैं। माता पिता की बातों को सुनने के बाद बच्चों की प्रतिक्रिया द्वारा आप समझ सकते हैं कि बच्चों को कौन सी चीजें पसन्द नहीं हैं। उदाहरण के लिए बच्चे चिड़चिड़ाते, क्रोधित होते,तनाव महसूस करते,या अपने माता पिता से अलग हो जाते हैं। ये प्रतिक्रियाएं दर्शाती है कि पिता को बच्चों के साथ अपने व्यवहार को बदलने की जरूरत है।

किस प्रकार एक पिता अपने बच्चों में आदर को संचारित कर सकता है? मेरे विचार से वह तीन क्षेत्रों में बच्चों को विकास करने की अनुमति देने के द्वारा ऐसा कर सकता हैः जिम्मेदारी के क्षेत्र में, अपनी समझ के क्षेत्र में तथा परिपक्व सम्बन्धों के क्षेत्र में विकास करने के द्वारा।

(1) होने दें कि आपके बेटे व बेटियां ज़िम्मेदार बने।
यदि आपके जीवन का मकसद केवल अपने बच्चों को खुश रखना है, तब आपके बच्चे आगे चलकर खराब, स्वार्थी, लापरवाह बनेगें। लेकिन यदि आप उन्हें जीवन के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में ज़िम्मेदारियां उठाना सिखाएंगे तो वे आगे चलकर ज़िम्मेदार व्यस्क बन पाएंगे। ज़िम्मेदारियों को विकसित करने के लिए चार स्तर हैं

पहला स्तर, अपने बच्चों के लिए सारे निर्णय लेना। एक बच्चे को आज्ञा मानना सीखना है! यदि बच्चों को आपके द्वारा चुनी गयी कोई चीज़ पसन्द नहीं आती है तो आप उसके सामने दूसरा विकल्प रखें। लेकिन बच्चे को चुनाव करना ज़रूर सीखना है! आप इस काम को तब करें जब आपका बच्चा बहुत छोटा हो। बच्चे आपके निर्णयों व चुनावों के द्वारा ही सीखते हैं कि क्या सही और क्या गलत है। लेकिन जैसे जैसे आपका बच्चा बढ़ता है आपके लिए उन्हें ज्यादा से ज़्यादा ज़िम्मेदारियां सौंपना ज़रूरी है।

दूसरा स्तर, अपने बच्चों के साथ मिलकर निर्णय लेना या चुनाव करना तथा उन कामों को मिलकर पूरा करना। आप इन कामों को खास तौर पर तब करते हैं जब आपका बच्चा प्राथमिक स्कूल में होता है। उनके सामने एक अच्छे आदर्श को रखें और उसके साथ साथ गुणवत्ता के स्तर व पारिवारिक नियमों को भी निर्धारित करें।

तीसरे स्तर में अपने बच्चों को अपने आप निर्णय लेने या चुनाव करने दीजिए, लेकिन अब भी उनको आपकी स्वीकृति पाने तथा सरक्षण की जरूरत है। यह काम आप उनके हाई स्कूल में होने पर करते हैं। वे जितनी आजादी प्राप्त करते हैं उतना ही उनको अधिक जिम्मेदारी निभाने वाला तथा आपके प्रति उत्तरदायी होना बहुत जरूरी है। ज़िम्मेदारियां उठाने का प्रशिक्षण देने के लिए कुछ क्षेत्र निम्नलिखित हैंः उनका गृहकार्य या काम, पारिवारिक रिश्ते, संयम, आर्थिक प्रबन्ध, अकेले सफर करना, दोस्त बनाना तथा परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करना।

अन्तिम स्तर में आप बच्चों को सारे काम पूरी तरह से अपने आप करने दें। आप उन्हें व्यस्क होने पर ऐसा करने देते हैं। अब वे परिपक्व व्यस्क हो चुके हैं और अब वे आपके प्रति नहीं वरन अपने सारे कामों में परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं। लेकिन आप आज भी मांग करने पर अपनी सलाह देने व उनकी सहायता करने के लिए उपलब्ध हैं। आपकी जिम्मेदारी अब उनको प्रेम करना, उनके लिए प्रार्थना करना और उनकी सहायता करना है जब चीज़ें उनकी हद से बाहर हो जाएं।

(2) होने दें कि आपके बच्चे अपने विश्वास को लेकर सुनिश्चित हों।

जब तक आप यह चाहते हैं कि आपके बच्चे आपके विश्वास या विचार से सहमत रहें, तब तक वे अपने विचार या विश्वास मत को विकसित करने का प्रयास नहीं करेंगें। इसलिए ऐसी जबरजस्ती न करें कि उन्हें आपके विश्वास मत, प्राथमिकताओं, अहमियत को मानना ही पड़ेगा, परन्तु अपने मत, विश्वास, अहमियत, प्राथमिकताओं को निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करें और मदद करें उनके सभी विचार बाइबल पर आधारित हों। इस तरह से वे एक जिम्मेदार व्यस्क बन पाएंगें।

अपने विश्वास का र्निमाण करने के लिए तीन कदम हैं

- पहला कदम। होने दें कि आपके बच्चें अपने आप बाइबल से सच्चाई की खोज करें (लूका 10:25–26)।
- दूसरा कदम। होने दें कि आपके बच्चे उस सच्चाई अनुसार काम करें।
- तीसरा कदम। उन कामों के परिणाम को लेकर आपस में चर्चा करें।

उदाहरण के लिए, कपड़े पहनने के मुददे पर, बाइबल में दो सिद्धान्त दिये गये हैं, आपके परिधान सामाजिक तौर पर ग्रहणयोग्य हों, जिसका मतलब है कि आपके कपड़ों को देखकर लोग कामुक न हों,और आपके कपड़े उपलक्ष्य के हिसाब से सास्ंकृतिक तौर पर उचित हों। ये दोनों सिद्धान्त निर्णय लेने के लिए एक सीमा को निर्धारित करते हैं। इस सीमा के दायरे में आपके बच्चों को पूरी आज़ादी है। आपका बच्चा अपना निर्णय लेता या चुनाव करता है। आप अपने बच्चें के साथ बैठकर उसके चुनाव के परिणाम तथा दूसरों व अपने ऊपर उसके प्रभावों पर चर्चा करें।

(3) होने दें कि आपके बेटे या बेटियां परिपक्त रिश्ते कायम करें।

आपका लक्ष्य स्वाधीनता निर्मित करना नहीं बल्कि स्वस्थ आन्तरिक–निर्भरता निर्मित करना है। बाइबल के अनुसार हर एक विश्वासी एक परिवार,एक कलीसिया या एक विशेष समाज का हिस्सा होता है। बाइबल का दृष्टिकोण किसी ऐसे समाज के बारे में बात नहीं करता, जिसमें हर कोई अपने ही रास्ते चला जा रहा हो, वरन बाइबल परिवार के सदस्य, कलीसिया के सदस्य और समाज के सदस्य के बारे में बात करती है। बाइबल के मत के अनुसार हम सभी को एक दूसरे की आवश्यकता है और हम सभी में एक दूसरे की सहायता करने के लिए अनोखी योग्यता पायी जाती है। इसलिए अपने बच्चों के अच्छे दोस्त बनाने में, भिन्न वंर्गों और समाज के लोगों के साथ रिश्ते बनाने और विपरीत लिंग के लोगों के साथ उचित सम्बन्ध बनाने में सहायता करें।

6:4

प्रश्न 4. मसीही माता पिता को अपने बच्चों की किस प्रकार परवरिश करनी चाहिए?

ध्यान दें। हर एक पिता की दो प्रमुख जिम्मेदारियां होती हैं अर्थात बच्चों की मां को प्रेम करना तथा बच्चों की परवरिश करना। अपने बच्चों को परमेश्वर के मार्गो की शिक्षा देने का अर्थ बच्चों को बाइबल की सच्चाईयों की शिक्षा देना है। बच्चों की परमेश्वर में होकर परवरिश करने का अर्थ,बच्चों को बाइबल की शिक्षाओं का पालन करना सिखाना है जिसका

मतलब बाइबल में पायी जाने वाली शिक्षाओं को अपने जीवन में इस्तेमाल करना है। प्रशिक्षण देने का अर्थ उन्हें बार बार प्रोत्साहित करना है। किसी को प्रशिक्षण देने में कई बार अनुशासन या उन्हें दण्ड देने की जरूरत पड़ती है।

(1) अपने बच्चों को इस संसार में एक उत्तम नागरिक बनने की शिक्षा दें।
अपने बच्चों को दिमागी,शारीरिक,भावनात्मक, आत्मिक और सामाजिक परिपक्वता की शिक्षा दें।
अपने बच्चों को बुद्धिमान बनाएं।
अपने बच्चों को प्रेम करना सिखाएं।
स्वस्थ्य परिवार ही मिलकर स्वस्थ्य राष्ट्र का र्निमाण करते हैं।
(2) अपने बच्चों को स्वर्ग के राज्य का उत्तम नागरिक बनाएं।
अपने बच्चों को पूरी तरह से परमेश्वर के अधीन रहना सिखाएं जैसा कि उसने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया है।
हर परिस्थिति में उन्हें परमेश्वर पर भरोसा करना सिखाएं।
बिना किसी शर्त उन्हें परमेश्वर की आज्ञा मानना सिखाएं।
उन्हें पवित्र व धार्मिक जीवन व्यतीत करना सिखाएं।
सबसे बढ़कर, उन्हें परमेश्वर से प्रेम करना, अपने पड़ोसी से प्रेम करना और उन्हें स्वीकार करना सिखाएं।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दें: इस अनुच्छेद का कौन सा सत्य मसीहियों के लिए सम्भवतः उपयोगी है?
बाँटें व लिखें। आइये हम एक दूसरे के साथ विचार विमर्श करके इफिसियों 6:1–4 के आधार पर इस्तेमाल में आने वाली बातों की एक सम्भावित सूची बनाएं।
ध्यान दें। इनमें से कौन सी उपयोगी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर चाहते हैं कि आप उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में इस्तेमाल करें?
लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को अपनी कॉपी में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को बाँटंने में स्वतन्त्र महसूस करें। (ध्यान रखें कि हर एक समूह में लोग अलग सच्चाईयों का इस्तेमाल करेंगे या उसी सच्चाई का अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगे। सम्भावित इस्तेमाल की सूची निम्नलिखित है।)

1. इफिसियों 6:1–4 से उपयोग की जाने वाली सम्भावित बातें।

6:1 नाबालिग बच्चों के लिए। परमेश्वर की आज्ञाओं व बाइबल की शिक्षाओं विरूद्ध आज्ञाओं को छोड़ अपने माता पिता की सारी बातों को मानें।

6:2 सारे लोगों के लिए। हर परिस्थिति में अपने माता पिता, सास–ससुर और अपने परमेश्वर पिता का आदर करें। उनका आदर करने का कोई भी एक व्यवहारिक तरीका अपनाएं और कुछ समय के उसी का अभ्यास करते रहें।

6:4 सारे पिताओं के लिए। अपने बच्चों को कभी रिस न दिलाये या निरूत्साहित न करें, चाहे वह बालक हो या व्यस्क।

6:4 पिताओं और नाबालिग बच्चों के लिए। अपने बच्चों की परवरिश बाइबल के सिद्धान्तों के अनुसार करें और उन शिक्षाओं को जीवन में इस्तेमाल करें।

2. इफिसियों 6:1–4 में पाये जाने वाले व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल किये जाने वाले तत्व।

अपने माता पिता से सलाह मांगने तथा उनके जीवन से अनुभवों को सीखना मैं अपने जीवन की आदत बनाना चाहता हूँ। मैं निश्चय ही अपने निर्णय व चुनाव खुद तय करूँगा लेकिन मैं उनके परामर्श को ध्यान से सुनने के द्वारा उन्हें आदर देना चाहता हूँ। मैं अपने बच्चों को प्रोत्साहित करने वाला बनकर उन्हें जिम्मेदार बनने के लिए,अपने विश्वास के प्रति सुनिश्चित होने के लिए लोगों के साथ परिपक्व सम्बन्ध स्थापित करने तथा संयम के साथ अपनी भावनाओं को प्रगट करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ। मैं मानता हूँ कि परमेश्वर ने एक पिता के रूप में मुझे एक बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है।

कदम 5. प्रार्थना	प्रतिउत्तर

आइये इफिसियों 6:1–4 में परमेश्वर द्वारा सिखाए गये सत्यों के आधार पर प्रार्थना करें।
(जो कुछ आपने बाइबल अध्ययन के दौरान सीखा है, प्रार्थना में उसका प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करना सीखें। याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग विषयों के लिए प्रार्थना करेंगे)

5	**प्रार्थना** (8मिनट) [मध्यस्थता] दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे तथा संसार के अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) [निर्धारित कार्य] अगले अध्याय के लिए

*(**समूह का अगुवा** :* समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करें या उन्हें डाउन लोड करने दें।)

1. सर्मपण: चेले बनाने के लिए समर्पित हों।

किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ इफिसियों 6:1–4 पर आधारित बाइबल अध्ययन को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना। रोमियों 9–12 तक रोज आधा अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. याद करना: गवाही देना । मत्ती 10:32। प्रतिदिन बाइबल की 5 याद की गयी आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना: किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5. चेलों को बनाने के सम्बन्ध में अद्यावधिक बना कर रखें। जिसमें आराधना के गीत, शिक्षा तथा तैयारी की सामग्री को भी लिख सकते हैं।